प्रकाशन की तिथि 01.2.2018

ओ३म्

एक प्रति मूल्य : रु० 4.00

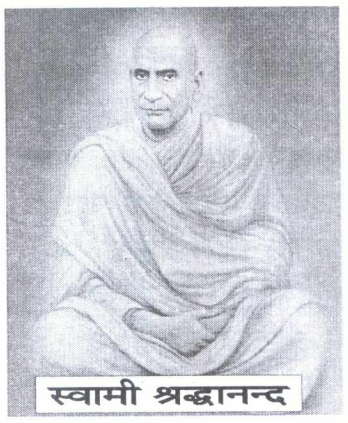
स्वामी श्रद्धानन्द

शुद्धि समाचार

सन् 1923 में स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा का मासिक मुखपत्र

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः । अथर्ववेद 12.1.12
भूमि मेरी माता है और मैं उस मातृभूमि का पुत्र हूँ।

पं. मदनमोहन मालवीय

वर्ष 41 अंक 2

"शुद्धि ही हिन्दू जाति का जीवन है"

वार्षिक शुल्क : 50 रुपये
आजीवन शुल्क : 500 रुपये

फरवरी 2018 विक्रम सम्वत् 2074 माघ-फालगुन

सनातन धर्मी नेता – पं. मदनमोहन मालवीय

दूरभाष : 011-23857244

परामर्शदाता : श्री हरबंस लाल कोहली ☼ श्री चतर सिंह नागर ☼ श्री विजय गुप्त ☼ श्री सुरेन्द्र गुप्त ☼ प्रबन्धक : श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के 95वें स्थापना वर्ष पर विशेष –

आह्वान

– चतर सिंह नागर

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा की स्थापना महर्षि देव दयानन्द जी सरस्वती के मानस पुत्र स्वामी श्रद्धानन्द जी ने, भारत के विभिन्न प्रान्तों से आये हिन्दू धर्म के 85 प्रतिनिधियों की उपस्थिति में **13 फरवरी सन् 1923 को आगरा (उ.प्र.)** में की थी। आये हुये प्रतिनिधियों में थे :-

प्रथम अधिकारी –

प्रधान – स्वामी श्रद्धानन्द जी !

उपप्रधान – (1) महात्मा हंसराज लाहौर (2) बाबू रामप्रसाद बी.ए. आगरा

महामंत्री – कुंवर माधवसिंह आगरा।

मंत्री – (1) बा. नाथमल आगरा (2) महाशय देवप्रकाश अमृतसर (3) चौबे बिश्वेश्वर दयाल ।

कोषाध्यक्ष – बाबू चांदमल जी, बी.ए. ।

अन्तरंग सदस्य – (1) श्रीराम आगरा (2) राजा नरेन्द्रनाथ, लाहौर (3) प्रो. गुलशनराय, लाहौर (4) पं. रामगोपाल शास्त्री (5) पंडित ठाकुरदत्त, लाहौर (6) महाशय खुशहालचन्द लाहौर (7) म. कृष्ण लाहौर (8) म. नारायण स्वामी (9) म. हरगोविन्द गुप्त कलकत्ता (10) कुवंर चांदकरण शारदा अजमेर (11) बा. शालिगराम, आगरा (12) डा. गोकुलचन्द नारंग।

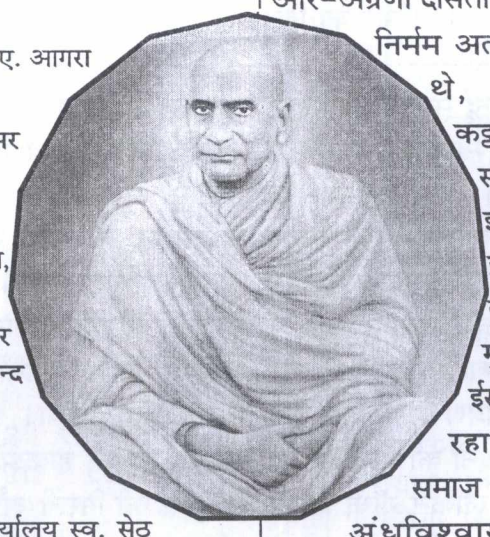

सभा का पंजीकरण 4 दिसम्बर 1924 में कराया गया।

आगरा, मथुरा, लखनऊ होते हुए सभा का मुख्य कार्यालय स्व. सेठ जुगल किशोर जी बिरला द्वारा प्रदत्त भूमि पर 22 मार्च 1926 तक बिरला लाइन्स, कमला नगर, दिल्ली में स्थानान्तरित हुआ, जहाँ आज भी विध्यमान है। सभा का मुख्य उद्देश्य कई शताब्दियों से भय व लोभ से विधर्मी बने हिन्दुओं को पुनः मुख्य धारा में लाना तथा हिन्दुओं में उत्पन्न जातियों से छुआ-छूत प्रथा को समाप्त करके सम्मान से जीवन जीने का मार्ग सुलभ कराना था। इसी उद्देश्य के लिए स्वामी श्रद्धानन्द जी ने पहले दलितोद्धार व अछूत्तोद्धार सभा का गठन किया था। निम्न वर्ग समझे जाने वालों के बच्चों, महिलाओं के लिए पाठशालायें खोलकर शिक्षा का प्रचार करना।

शुद्धि सभा द्वारा 13 फरवरी 1923 से स्वामी श्रद्धानन्द जी के नेत्तृत्व में (23 दिसम्बर 1926 तक) और बाद में मार्च 1931 तक 1 लाख 83 हजार बिछुड़े हुये भाईयों को पुनः हिन्दू धर्म में शामिल किया, 4 हजार महिलाओं अनाथों की रक्षा की 10 हजार के लगभग दलितों को विधर्मी होने से बचाया। 127 शुद्धि सम्मेलन किये गए। 156 पंचायतें कराकर घर वापसी का संदेश दिया। उस समय 48,000.00 रु. शुद्धि संबंधी साहित्य पर व्यय किया। स्वामी श्रद्धानन्द ने उत्तर भारत में पर्वतीय क्षेत्रों में सघन प्रचार करके दलितो को, आर्य उपनाम दिया।

सभा का मुख्य पत्र "शुद्धि समाचार" हिन्दी भाषा में फरवरी 1925 से प्रकाशित किया जा रहा है। सभा के अन्तर्गत शुद्धि के प्रचारक देश भर में कार्य कर रहे हैं तथा विद्यालय चल रहे हैं। दान में दी गई। सम्पत्ति के प्रबंधन हेतु ट्रष्ट बनाया गया, जिसका पंजीकरण 5 अप्रैल 1944 को किया गया। नियति की बिडम्बना देखिये कि हिन्दू शुद्धि सभा के संस्थापक स्वामी श्रद्धानन्द जी, हिन्दू हितार्थ 23 दिसम्बर 1926 को अपना सर्वस्व न्योछावर कर गये और अपने मानस पिता महर्षि देव दयानन्द सरस्वती जी की तरह मौन संदेश दे गये।

स्वामी श्रद्धानन्द का यह है अमर संदेशः-

गिरो, उठो, गिर-गिर उठो, उठना मुख्य उद्देश्य।।

विस्तृत जानकारी एवं शुद्धि सभा को सहयोग देने के लिये, कृपया शुद्धि समाचार एवं शुद्धि सभा के सदस्य बने।

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के 95वें स्थापना वर्ष पर विशेषाँक

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने शुद्धि सभा की स्थापना क्यों की ? कारण और निवारण

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का जन्म ऐसे समय हुआ था, जब इस देश के लोग एक ओर-अंग्रेजी दासता और अंग्रेजो के निर्मम अत्याचारों से त्रस्त थे, दूसरी ओर कट्टरपंथी मुस्लिम संगठनों और ईसाई मिशनरियों द्वारा हिन्दुओं को बलात मुसलमान और ईसाई बनाया जा रहा था। हिन्दू समाज के ठेकेदार, अंधविश्वासी दिशाहीन पंड़ित, उस समय यदि कोई भूलकर भी किसी मुसलमान या ईसाई के घर पानी पी लेता था अथवा उसकी किसी बहन बेटियों को सहमति से मुसलमान बना लेते थे, तो वे पुनः उसको हिन्दू समाज में वापिस लेने को तैयार नहीं होते थे।

स्वामी श्रद्धानन्द जी का पूर्व नाम महात्मा मुन्शीराम तथा बचपन का नाम ब्रहस्पति था। पिता श्री नानक चन्द जी पुलिस कोतवाल ने बरेली प्रवास के दौरान श्री मुन्शीराम जी का सम्पर्क महर्षि दयानन्द जी सरस्वती से कराया। श्री मुन्शीराम जी घोर नास्तिक व कुसंगतों में फसे हुये थे। इसकी स्वीकारोक्ति स्वयं श्री मुन्शीराम जी ने महर्षि देव दयानन्द जी के सम्मुख की थी । प्रमाण आत्म-कथा 'कल्याण मार्ग के पथिक' में मिलता है। स्वामी दयानन्द जी द्वारा शंका-समाधान करने के बाद संशय के बादल छट गये और श्री मुन्शीराम जी वैदिक पथ पर दौड़ चले।

बेटी वेद कुमारी ने विद्यालय में सिखाया हुआ यह भजन सुनाया "ईसा ईसा वोल, तेरा लागेगा मोल और ईसा मेरा राम रमैया, ईसा मेरा कृष्ण कन्हैया" तो पिता श्री मुन्शीराम जी भौचक्के रह गये। उन्होंने विचार किया कि यदि मुझ जैसे वेदानुयायी के घर में ईसा ने घुसपैठ करली है तो सामान्य हिन्दू का घर कैसे सुरक्षित रह सकता है। तत्काल जालन्धर में प्रथम वैदिक कन्या पाठशाला की स्थापना की और दोनो बेटियों को उसमें पढ़ाया। तत्पश्चात संकल्पशील श्री मुन्शीराम ने गुरुकुल कांगड़ी सहित नौ (9) गुरुकुलों की स्थापना करके पाश्चात्य शिक्षा को चुनौती दी और देश में व्यापत 5 मकारः मैकाले, मेक्समूलर, मिशनरीज, मनीपावर और मिलिट्री के उत्तर में 5 सकारः स्वधर्म, स्वदेशी, स्वभाषा, स्वाभिमान और स्वंतन्त्रता की स्थापना हेतु अथक प्रयास किया प्रमाण उनके पुत्र श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति द्वारा लिखित पुस्तक "मेरे पिता" श्री मोहनदास करमचन्द गाँधी जी जब अफ्रीका से आकर गुरुकुल कांगड़ी में पधारे तो श्री मुन्शीराम जी ने उन्हें धन राशि के अलावा, महात्मा गाँधी नाम से सम्बोधित किया। गुरुकुल काँगड़ी व अन्य गुरुकुलों का प्रबंधन योग्यआचार्यो को सोंपकर, 1917 में

– शेष पृष्ठ 2 पर

शुद्धि समाचार में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सम्पादकीय

– आचार्य गवेन्द्र शास्त्री

वैदिक धर्म के अनुयायिओं और आर्य समाज के सन्दर्भ में मास फरवरी अपना विशेष महत्त्व रखता हैं। क्योंकि इन्हीं अवसरों पर इस वर्ष महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्मदिन तथा बोध दिवस शिवरात्रि समस्त आर्य सामाजिक जगत् में धूम–धाम के साथ मनायी जा रही है। आधुनिक काल खण्ड में स्वामी दयानन्द का आविर्भाव संसार के इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण अध्याय है, जिसका समूचे विश्व पर अद्भुत प्रभाव पड़ा है। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक क्षेत्रों पर इनके उपदेशों का विशेष प्रभाव पड़ा है। आज उनके द्वारा किये गये मानवता के प्रति लोगों का अनुकूल या प्रतिकूल जो भी मन्तव्य हो किन्तु यह एक सार्वजनीन सत्य है कि समूचे विश्व का कोई भी व्यक्ति उनकी उपेक्षा करने का दुःसाहस नहीं कर सकता। अपनी सम्पूर्ण दैवी शक्तियों के साथ संसार के हित के लिए सर्वथा समर्पित स्वामी जी महान् क्रान्तिकारी प्रवृत्ति के व्यक्तित्व थे। प्राचीन वैदिक संस्कृति के अनुसार सामाजिक विसंगतियों का निवारण करके पुनः वैदिक धर्म की प्रतिष्ठा करना उनके जीवन का मुख्य उद्देश्य था। वह परम आस्तिक, निर्भीकता के साथ सत्य का उपदेश करने वाले, स्वराज्य के प्रबल समर्थक, सामाजिक समरसता–समानता के पक्षधर, कोमल हृदय और दयालु प्रकृति के महान् आत्मा थे। विश्व के कल्याण के लिए उन्होंने आर्य समाज जैसे सुधारवादी संगठन की संस्थापना की और संसार का हित संसाधन उसका मुख्य उद्देश्य बताया। "संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है।" यह नियम बनाकर उन्होंने अपने समस्त अनुयायिओं तथा श्रेष्ठजनों को आर्यसमाज के साथ मिलकर संसार की उन्नति के लिए कार्य करने की प्रेरणा प्रदान की। उनके उपदेशों से पाखण्ड खण्ड–खण्ड हो गये। दुष्ट–दुराचारियों की कूट–कापट्य पूर्ण किले की प्राचीरें ढह गईं। उनके वेद भाष्य और वेदानुमोदित ग्रन्थों के प्रचार–प्रसार से देश–जाति में उत्साह की, उमंग की लहर व्याप्त हो गई। उनकी कालजयी कृति "सत्यार्थ–प्रकाश" ने परवर्ती वंश परम्परा को सद् विचारों का एक ऐसा कवच–कुण्डल प्रदान किया जिसके प्रयोग से राष्ट्र व धर्म के सेवी जनों ने जनता का मार्ग दर्शन किया। कविवर प्रकाश जी सत्यार्थ प्रकाश के और स्वामी जी के प्रभाव को रेखांकित करते हुए लिखते हैं:–

जैसे मृगझुण्ड देख हरि को भाग जाता,
जैसे अन्धकार रविरश्मि देख जाता है।
जैसे शुभकर्म से न पाप कर्म रहें शेष,
सज्जनों का संग फल उत्तम दिखाता है।
पारस के स्पर्श से है लोहा भी सुवर्ण बनता,
स्वाति बूँद सीपी में मोती बन दिखाता है।
वैसे स्वामी दयानन्द का सदुपदेश,
मानव मनों से भ्रम जाल को भगाता है।

स्वामी जी के बोध दिवस और जन्म दिवस पर आर्यजन आत्म चिन्तन करके उनके कार्य को और अधिक गतिमान करते हुए उनके "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" के संकल्प को पूर्णता तक पहुँचायें तभी इन पर्वों की सार्थकता है।

– शेष पृष्ठ 2 का....

काँगड़ी स्थित मायापुर वाटिका में बिना दीक्षा गुरु बनाये, अग्नि को साक्षी करके सन्यास आश्रम में प्रवेश किया और अपना नाम स्वयं श्रद्धानन्द रखा। यह शायद–विश्व का पहला उदाहरण है। इसके बाद स्वामी श्रद्धानन्द स्वतंत्रता आन्दोलन में कूद गये और महात्मा गाँधी जी, लाला लाजपतराय जी के साथ कांग्रेस अधिवेशनों आदि समारोहों में योगदान करने लगे।

सन् 1919 तक विशेषकर रौलेट एक्ट के विरोध और जामा मस्जिद के मिम्बर पर तहरीर के समय तक) स्वामी जी हिन्दू मुस्लिम एकता के पयार्य बन गये थे।

इसी मध्य मुसलमानों द्वारा भोले भाले अशिक्षित–हिन्दुओं का लोभवश धर्मान्तरण शुरु हो रहा था, जिसका सबसे अधिक प्रभाव सूदुर ग्रामीण आदिवासी क्षेत्रों में अधिक था। स्वामी श्रद्धानन्द जी की नजर इस ओर गयी और कांग्रेस मंच पर इस समस्या को उन्होंने जोरदार ढंग से उठाया। लेकिन कांग्रेसी नेता इसे अनावश्यक समझ रहें थे और गांधी जी मुसलिमों द्वारा धर्म परिवर्तन को व्यक्ति का मौलिक अधिकार कह रहे थे। 1920 के दशक में हिन्दुओं और मुसलिमों के मध्य गहरी खाई बन गयी। परिणाम स्वरूप भयंकर हिन्दू मुसलिम दंगे हुये, जैसे केरल में मोपला, अमृतसर, सहारनपुर आदि। इस समस्या के समाधान के लिये कांग्रेस ने एक बैठक का आयोजन किया जिस की अध्यक्षता स्वामी जी ने की। स्वामी जी ने साम्प्रदायिक समस्या पर गंभीर और अध्यात्मक विशलेषण किया और दंगो का कारण मुसलमानों की साम्प्रदायिक सोच को बताया, लेकिन गाँधी जी ने इससे असहमति जतायी। गांधी जी ने स्वामी जी से कहा कि तुम शुद्धि आन्दोलन बन्द कर दो, इस पर स्वामी जी ने कहा कि मैं इस आन्दोलन को बन्द करने को तैयार हूँ अगर मुसलिम उलेमा तवलीग के मोलवियों को हटा दें, लेकिन मुसलिम उलेमा नहीं मानें। इसी मध्य स्वामी जी को ख्वाजा हसन निजामी द्वारा लिखी पुस्तक "दाहए इस्लाम" पढ़कर हैरानी हुयी, जिसमें हिन्दुओं को मुसलिम बनाने की गुप्त योजना थी।

कुवर सुखलाल जी ने भी कहा था "आर्यो इन दलितो को गले लगालो वरना ये लाल गौरो के हो जायेगे। वास्तव में धर्मान्तरण के परिपेक्ष्य में हिन्दू पीड़ित समुदाय है, उत्पीड़क नहीं। स्वामी जी ने भी कहा था कि हिन्दू (आर्य) सृष्टि के आदि से हैं अन्य मत बाद में बने। कांग्रेस के काकीनाडा अधिवेशन में अध्यक्षीय भाषण देते हुये, मु. अली जिन्ना ने कहा था कि हिन्दुस्तान के "छः करोड़ अछूत लावारिस माल है इसे आधा आधा हिन्दुओं और मुसलमानों में बाँट देना चाहिये।" लेकिन गाँधी जी ने इसका विरोध नहीं किया। इस घटना ने स्वामी जी को झकझोर दिया और हिन्दुओं की गिरती और मुसलमानों की बढ़ती जनसंख्या का आकलन करके, शुद्धि सभा गठन का निश्चय किया। इस का आधार 1911 की भारत की जनगणना संबंधी रिर्पोट थी जो उन्हें कर्नल मुखर्जी द्वारा उपलब्ध करायी थी। इसका उल्लेख स्वामी जी ने स्वयं लिखित "हिन्दू संगठन" में किया है।

स्वामी जी के आंकलन की भविष्यवाणी आज के परिपेक्ष्य में सही साबित हो रही है। 1951 की जणगणना के अनुसार भारत में हिन्दूओं की जनसंख्या 85% थी जो 2011 में घटकर 79% हो गयी।

कालान्तर में घटित घटनाओं का विशलेषण करते हुये, दूरदर्शी हिन्दू हिताय स्वामी श्रद्धानन्द जी ने तत्काली शुद्धि सभा प्रधान सर राजा रामपाल सिंह के. ई. सी. से कहा था कि जब मैं अपना शेष जीवन बिछड़े हुये हिन्दुओं की घर–वापसी आन्दोलन में लगाऊगा। मैं रहू या न रहू शुद्धि कार्य बन्द नहीं होना चाहिये।

स्वामी जी ने हिन्दुओं से हिन्दुओं में उत्पन्न जाति व भेद को समाप्त करने का निर्देश दिया। उन्होंने देश – व्यापी भ्रमण करके पर्वतीय/ सुदूर क्षेत्रों में रहने वाले आदिवासियों/ पिछड़ो/ दलितो को 'आर्य ' उपनाम दिया।

इन्हीं उद्देश्यों की पूर्त्ति के लिये स्वामी श्रद्धानन्द जी ने 13 फरवरी 1923 को उत्तर भारत से आये 85 हिन्दू धर्म के प्रतिनिधियों के समक्ष–आगरा में भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा की स्थापना की थी और सभा के अधिकारियों को नियुक्त किया था।

शुद्धि सभा के आज के संदर्भ में प्रासंगिकता/आवश्यकता जानने के लिये स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा लिखित आत्म कथा "कल्याण मार्ग के पथिक" और हिन्दू संगठन तथा अनन्य विद्वानों द्वारा लिखित मोपला, काला पहाड, अन्तिम हिन्दू, मुस्लिम विद्वानों की घर वापसी व शुद्धि आन्दोलन संबंधी साहित्य का अवलोकन अवश्य करें।

-चतर सिंह नागर
(महामंत्री)
भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा

'देश एवं आर्यसमाज के इतिहास में स्वामी श्रद्धानन्द जी का गौरवपूर्ण स्थान'

– –मनमोहन कुमार आर्य

23 दिसम्बर, को ऋषिभक्त स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस है। इसी दिन दिल्ली में एक विधर्मी जुनूनी हत्यारे अब्दुल रसीद ने रुग्णावस्था में स्वामी जी को गोली मारकर शहीद कर दिया था। देश के इतिहास में के हिन्दू बन्धुओं को विदेशी यवन विधर्मियों ने देश पर आक्रमण कर यहां के लोगों को मारा, बहिनों व माताओं की इज्जतं से खिलवाड़ किया, हमें गुलाम बनाया और हमें जजिया कर तक देना पड़ा। अनेकानेक और भी अन्याय व उत्पीड़न झेलना पड़ा। इन विदेशी आततायियों के जुल्मों की असंख्य कहानियां है। यह सिलसिला शताब्दियों तक चला। उसके बाद अंग्रेजों ने भारत को गुलाम बनाया और भारत की जनता पर अमानुषिक अत्याचार किये। साथ ही भोले भाले लोगों का धर्मान्तरण भी किया। ऐसे समय में महर्षि दयानन्द ने जन्म लेकर जनजागरण करते हुए वैदिक धर्म व संस्कृति का शुद्ध स्वरूप प्रस्तुत किया और उसका प्राणपण से प्रचार किया। ईश्वर ने महर्षि दयानन्द को गजब की बुद्धि व ज्ञान दिया था। समाज सुधार, अज्ञान तथा अन्धविश्वास दूर करने की प्रेरणा उन्हें अपने विद्या गुरु स्वामी विरजानन्द सरस्वती से मिली थी। स्वामी दयानन्द ने चुनौती देते हुए घोषणा की थी कि वेद ही वस्तुतः संसार की समस्त मानव जाति का एकमात्र धर्मग्रन्थ है। वेदानुकुल मान्यतायें व सिद्धान्त ही ईश्वर प्रदत्त होने से उन्हें स्वीकार थे और वेद विरुद्ध सभी मान्यताओं व सिद्धान्तओं का वह प्रमाणों, युक्तियों व तर्कों से खण्डन करते थे। उनके समय में संसार का कोई वेदेतर विद्वान उनकी किसी मान्यता का युक्ति व प्रमाण के साथ खण्डन नहीं कर सका। स्वामी दयानन्द के वेद प्रचार के कार्य के कारण ही 30 अक्तूबर, 1883 ई. को उनके विरोधी शत्रुओं के धोखे से विषपान द्वारा उनकी मृत्यु हुई। उसके बाद स्वामी दयानन्द जी के शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द ने उनके कार्यों को योग्यतापूर्वक निभाया। **स्वामी श्रद्धानन्द ने स्वामी दयानन्द की वेदों की शिक्षाओं और सिद्धान्तों पर आधारित गुरुकुलीय शिक्षा का उद्धार किया।** उन्होंने सन् 1902 में गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की थी जहां वेदों के अनेकानेक विद्वान बनें जिन्होंने शिक्षा, अध्यापन, पत्रकारिता, स्वतन्त्रता आन्दोलन, इतिहास, धर्म प्रचार, शुद्धि, जन्मना जाति के विरोध में प्रचार व दलितोत्थान आदि कार्यों सहित अनेकानेक समाज सुधार के कार्य किये

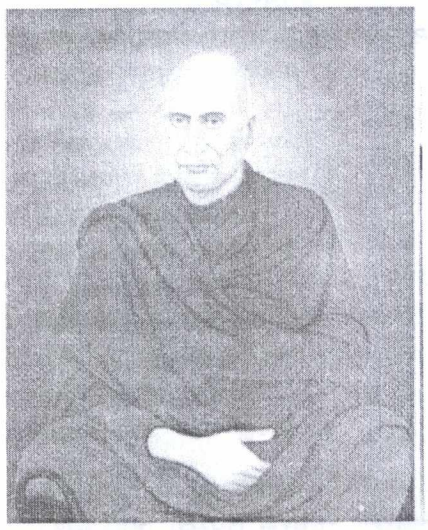

और वैदिक धर्म का प्रचार कर भारत का गौरवमय इतिहास रचा।

स्वामी श्रद्धानन्द जी का व्यक्तित्व बहुआयामी था। वह वैदिक धर्म व संस्कृति के अनुरागी महापुरुष थे। आदर्श ईश्वर भक्त, वेदभक्त, देशभक्त, मानवता के पुजारी, शिक्षा शास्त्री, समाज सुधारक और वेद धर्म प्रचार सहित स्वामी श्रद्धानन्द स्वतन्त्रता आन्दोलन के शीर्ष नेता और दलितों के मसीहा थे। विधर्मियों की शुद्धि का उन्होंने अपूर्व ऐतिहासिक कार्य किया है। उनके द्वारा स्थापित गुरुकुल कांगड़ी व अन्य गुरुकुल आज भी वैदिक धर्म व संस्कृति के उत्थान में अपनी विषेश भूमिका निभा रहे हैं। स्वामी जी ने देश की स्वतन्त्रता के आन्दोलन में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। रालेट एक्ट के विरोध में सन् 1919 में उन्होंने दिल्ली में अंग्रेज सरकार के विरोध में आन्दोलन के नेतृत्व की बागडोर अपने हाथों में ली थी और उसे सफल किया था। जिस आन्दोलन का उन्होंने नेतृत्व किया था, उसके जलूस के चांदनी चौक आने पर अंग्रेजों के गुरखा सैनिकों ने स्वामी जी पर अपनी बन्दूकों की संगीने तान दी थी। तभी भीड़ को चीर कर स्वामी श्रद्धानन्द जी सैनिकों के सामने आये थे और सीना खोलकर सैनिकों को ललकारते हुए बोले थे, **'हिम्मत है तो मेरे सीने पर मारो गोली'।** स्वामी जी की यह ललकार, उनकी वीरता, निर्भयता, निडरता व साहस को देखकर वहां तैनात अंग्रेज अधिकारी घबरा गया था और उसने सैनिकों को बन्दूकें नीची करने का आदेश दिया था। स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन की यदि अन्य घटनाओं को छोड़ भी दिया जाये तो यही घटना उन्हें महान् बनाने के लिए काफी है। इससे जुड़ी घटना यह भी है कि स्वामी श्रद्धानन्द जी की वीरता की यह खबर पूरी दिल्ली और देश भर में फैल गई थी। इससे प्रभावित होकर दिल्ली की जामा मस्जिद के मिम्बर से उन्हें मुस्लिमों की एक सभा को सम्बोधित करने के लिए आमंत्रित किया गया था। स्वामी जी ने वहां पहुंच कर भी एक नये इतिहास की रचना की जो वैदिक धर्म के इतिहास की घटनाओं में अन्यतम घटना है। उन्होंने जामा मस्जिद के मिम्बर से वेद मन्त्र **'ओ३म् त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता भातक्रतो बभूविथः। अधा ते सुम्नी महे।।'** बोल कर अपना सम्बोधन आरम्भ किया था और भारी मुस्लिम जनसमूह में उनकी जय जयकार हुई थी। उसके बाद यह सम्मान किसी गैर मुस्लिम व्यक्ति को कभी नहीं मिला कि वह जामा मस्जिद के मिम्बर से सम्बोधन दे सके। प्रत्यक्ष दर्षियों व समकालिन लोगों ने लिखा हैं कि चांदनी चौक की घटना से स्वामी श्रद्धानन्द जी दिल्ली के बेताज बादशाह बन गये थे। बताते हैं कि स्वामी जी ने जामा मस्जिद से अपने सम्बोधन में कहा था कि हिन्दी का हम शब्द 'ह' से हिन्दू व 'म' से मुसलमान को दर्शाता है और यह शब्द दोनों समुदायों की एकता का प्रतीक है।

देश की स्वतन्त्रता के इतिहास में अमृतसर में 13 अप्रैल, सन 1919 की बैसाखी के दिन जलियांवाला बाग की नरसंहार की घटना प्रसिद्ध है जिसमें शान्तिपूर्ण सभा कर रहे हजारों स्त्री व पुरुषों को बिना चेतावनी दिए गोलियों से भून दिया गया था। गोली चलाने का आदेश ब्रिगेडियर जनरल रेजीनाल्ड डायर ने दिया था। इस गोलीकाण्ड में लगभग 1500 लोग मरे थे और 1200 से अधिक घायल हुए थे। इसके विरोध में चेन्नई में कांग्रेस का अधिवेशन आयोजित किया गया था। इसके लिए कोई उपयुक्त नेता न मिलने पर स्वामी श्रद्धानन्द जी को ही अधिवेशन का स्वागताध्यक्ष बनाया गया था। इसकी एक विषेशता यह थी कि यहां स्वामी श्रद्धानन्द ने अपना स्वागत भाषण हिन्दी में दिया था। इस घटना से स्वामी श्रद्धानन्द कांग्रेस के राष्ट्रीय नेता की कोटि के नेता बन गये थे। डा. विनोद चन्द्र विद्यालंकार द्वारा सम्पादित **'स्वामी श्रद्धानन्द – एक विलक्षण व्यक्तित्व'** ग्रन्थ में इस घटना का विस्तार से वर्णन किया गया है। पाठकों को इस ग्रन्थ का अध्ययन करना चाहिये। इससे स्वामी श्रद्धानन्द जी के महान व्यक्तित्व को भली प्रकार से तक जाना जा सकता है।

आगरा व मथुरा के आस पास रहने वाले मलकाने राजपूत जिनके सभी रीति रिवाज व पूजा पद्धतियां आदि हिन्दू व हिन्दुओं के समान थीं, मुसलमान कहलाते थे। वह मुस्लिम मलकाने राजपूत चाहते थे उनको उनके पूर्वजों के हिन्दू धर्म में शामिल कर लिया जाये। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने उनका यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया था और भारतीय शुद्धि सभा की स्थापना कर लगभग 2 लाख की संख्या में मलकाने राजपूतों को शुद्ध कर उन्हें हिन्दू धर्म में प्रविष्ट कराया था। उनका यह कार्य इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में अंकित है। यह शुद्धि वस्तुतः वेद प्रचार आन्दोलन है जिसका एक उद्देष्य भय व प्रलोभन आदि अनेक कारणों से अतीत में धर्मान्तरित अपने बिछुड़े भाईयों को ईश्वरीय ज्ञान वेद की शरण में लाया जाना था। आर्य जाति इस कार्य के महत्व को जानकर इसका अनुसरण करेगी तो इतिहास में जीवित रहेगी अन्यथा इसकी पूर्व काल में जो दुरावस्था हुई है, भविष्य में उससे भी बुरी हो सकती है। हम यह भी बता दें कि आर्यसमाज का वेद प्रचार और शुद्धि का आन्दोलन सत्य को ग्रहण करने और असत्य के त्याग करने के सिद्धान्त पर आधारित है। आर्यसमाज सभी मतावलम्बियों की धर्म विषयक जिज्ञासाओं सन्तोषजनक समाधान करता है जबकि अन्य ऐसा नहीं करते। मनुष्य जाति की उन्नति का एकमात्र कारण सत्य का प्रचार ही है। अतः आर्यसमाज को सत्य ज्ञान के भण्डार वेदों का संगठित होकर पुरजोर प्रचार करना चाहिये। यह ध्यान रखना चाहिये कि वेदाज्ञाओं का पालन ही धर्म है। **'कृण्वन्तो विश्मार्यम'** इन वेद के शब्दों संसार के लोगों को विश्व के लोगों को श्रेष्ठ आचारण वाला बनाने की आज्ञा दी गई है।

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने दलितोत्थान का कार्य भी प्रभावशाली रूप से किया। कांग्रेस में रहते हुए उन्होंने अनुभव किया कि उनके इस कार्य में कांग्रेस द्वारा वह प्राथमिकता व सहयोग नहीं मिल रहा है जिसकी उन्हें अपेक्षा व आवश्यकता थी। इस कारण उन्होंने अपना रास्ता बदलते हुए कांग्रेस छोड़ दी। इतिहास में यह भी पढ़ने को मिलता है पंजाब में किसी स्थान पर सवर्ण हिन्दू अपने कुओं से दलितों को पानी नहीं भरने देते थे। ऐसे स्थानों पर स्वामी श्रद्धानन्द और उनके आर्यसमाजी सहयोगी स्वयं पानी भरकर दलित भाईयों के घर पहुंचाते थे। हम अनुभव करते हैं कि आर्यसमाज व इसके नेताओं ने समाज के उपेक्षित व दलित वर्ग को दलित नाम दिया और उनके उत्थान के लिए दलितोत्थान का आन्दोलन चलाया। कांग्रेस ने स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद दलित बन्धुओं को आरक्षण का लाभ

देकर सुविधाभोगी बना दिया जिससे वह समाज में विलीन होने के स्थान पर स्वयं को पृथक अनुभव करने लगे। आर्यसमाज दलितों का वैदिक शिक्षा द्वारा उत्थान कर उन सबको समग्र हिन्दू समाज में गुण, कर्म व स्वभाव के अनुसार समावेष करना चाहता था जबकि राजनीतिक दलों ने उन्हें सुविधा देकर उन्हें अपना वोट बैंक बना लिया जिससे दलितोत्थान का कार्य अवरुद्ध हो गया और वर्तमान में यह समाज का एक पृथक वर्ग सा बन गया है। हमारे सामने ऐसे उदाहरण हैं कि कुछ दलित परिवारों के बन्धु गुरुकुलों में पढ़कर वेदों के विद्वान बने, वेदों पर टीकायें आदि लिखी, मांस–मदिरा का सेवन त्यागा, स्वास्थ्यप्रद घी–दुग्ध आदि का भोजन किया, आर्यसमाज में हिन्दुओं के घरों में पूजा पाठ कराने वाले सम्मानित पुरोहित बनें और समाज में सम्मानित स्थान पाया जबकि आर्यसमाज से पृथक दलित सामाजिक दृष्टि से वह स्थान प्राप्त नहीं कर सके।

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने सद्धर्म प्रचारक पत्र का सम्पादन व प्रकाशन भी किया था। यह पंजाब में बहुत लोकप्रिय पत्र था। पहले यह उर्दू में प्रकाशित किया जाता था। ऋषि दयानन्द के हिन्दी को महत्व दिये जाने के कारण आपने, पंजाब में उर्दू पाठको की बहुसंख्या होने पर भी, अपने पत्र को उर्दू के स्थान पर हिन्दी में प्रकाशित करना आरम्भ कर दिया था। इससे उन्हें भारी आर्थिक घाटा भी हुआ था परन्तु धर्म को महत्व देने वाले स्वामी श्रद्धानन्द जी ने आर्थिक घाटे चिन्ता नहीं की। स्वामी जी आर्यसमाज, आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पद पर रहे। **ऋषि दयानन्द जी का खोजपूर्ण जीवन चरित लिखाने का श्रेय भी आपको है।** ऋषि जीवन के अनुसंधानकर्ता और सम्पादक रक्तसाक्षी पं. लेखराम जी आपके गहरे मित्र व सहयोगी थे। दोनों में गहरे आत्मीय सम्बन्ध थे। आपने पं. लेखराम जी की एक मुस्लिम आततायी द्वारा हत्या के बाद उनका श्रद्धापूर्ण शब्दों में जीवन चरित्र लिखा है। यह वैदिक धर्म पर शहीद हुए स्वामी श्रद्धानन्द का अपने से पहले धर्म की वेदी पर शहीद हुए पं. लेखराम जी को श्रद्धांजलि है। इसे देश की युवा पीढ़ी को अवश्य पढ़ना चाहिये। स्वामी श्रद्धानन्द जी एक बहुत अच्छे लेखक भी थे। आप अंग्रेजी, उर्दू, हिन्दी आदि भाषाओं के विद्वान थे। आपने हिन्दी व उर्दू में पर्याप्त संख्या में ग्रन्थ लिखे हैं। आपका समस्त साहित्य, कुछ उर्दू आदि ग्रन्थों को छोड़कर, 11 खण्डों में वैदिक साहित्य के प्रकाशक मै. विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली से प्रकाशित हुआ है। इसका नया संस्करण इसी प्रकाशक द्वारा दो खण्डों में भव्य रूप में पुनः प्रकाशित किया गया है। स्वामी जी ने अपनी आत्मकथा **'कल्याण मार्ग का पथिक'** लिखी है जो किसी उपन्यास की तरह ही रोचक है। इसमें आपने अपने जीवन की किसी भी गुप्त बात को छिपाया नहीं है। आत्मकथा साहित्य में यह बेजोड़ ग्रन्थ है। वेद भाष्यकार डा. आचार्य रामनाथ वेदालंकार जी के सुपुत्र डा. विनोदचन्द्र विद्यालंकार जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के व्यक्तित्व व कृतित्व पर **'एक विलक्षण व्यक्तित्व : स्वामी श्रद्धानन्द'** नाम से एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ लिखा है। इस ग्रन्थ की महत्ता का अनुमान इसे पढ़कर ही लगाया जा सकता है। हर साहित्य प्रेमी को इस ग्रन्थ को पढ़ता चाहिये।

जिन दिनों स्वामी श्रद्धानन्द जी गुरुकुल कांगड़ी का संचालन करते थे तो वहां श्री मोहन दास गांधी भी आये थे। गांधी जी यहां आने से कुछ समय पूर्व ही दक्षिण अफ्रीका से भारत आये थे। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने आपको मिस्टर गांधी न कहकर महात्मा गांधी के नाम से सम्बोधित किया था। गांधी जी के नाम के साथ **'महात्मा'** शब्द का प्रथम प्रयोग स्वामी जी ने ही किया जो गांधी जी की मृत्यु तक उनके नाम के साथ जुड़ा रहा। यह बता दें कि जब गांधी जी ने दक्षिण अफ्रीका में आन्दोलन किया था तो स्वामी श्रद्धानन्द जी के शिष्यों ने भारत में मेहनत व मजदूरी करके व भोजन आदि व्यय में कमी करके एक अच्छी बड़ी धनराशि गांधी जी को आन्दोलन में सहायतार्थ अफ्रीका भेजी थी। एक बार इंग्लैण्ड में विपक्ष के नेता रैम्जे मैकडानल, जो बाद में इंग्लैण्ड के प्रधानमंत्री बने, गुरुकुल आये और यहां स्वामी जी के निकट रहे। आपने अपने संस्मरणों में स्वामी श्रद्धानन्द जी को जीवित ईसा मसीह की उपाधि से स्मरण किया है। उन्होंने यह भी लिखा है कि यदि कोई व्यक्ति सेंट पीटर की मूर्ति बनाना चाहे तो मैं उसे स्वामी श्रद्धानन्द की भव्य मूर्ति को देखने की संस्तुति करूगां। स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन की अनेक प्रेरणाप्रद घटनायें हैं जिसके लिए उनका जीवन चरित व श्रद्धानन्द ग्रन्थावली पढ़ना उपयुक्त है। अधिक विस्तार न कर हम लेख को विराम देते हुए उस आदर्श महापुरुष, ईश्वर, वेद व देश भक्त, गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली के उद्धारक, समाज सुधारक, दलितोद्धारक, शुद्धि का सुदर्शन चक्र चलाने वाले स्वामी श्रद्धानन्द जी को अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। ओ३म् शम्।

196 चुक्खूवाला–2
देहरादून–248001
फोनः09412985121

स्वामी श्रद्धानन्द जी महान्

भारत मां के तपःपूत स्वामी श्रद्धानन्द जी वीर महान् ।
भूलेगा न जगत् आपका, देशभक्त नेता बलिदान ।।
वैदिक मर्यादा के पालक, धर्म नीति के शुभ संचालक ।
देशभक्त बलवान् बनाए, नाथ आपने लाखों बालक ।।
गुरुकुलों की प्रथा डाली, किया अचम्भित सकल जहान ।
भूलेगा न जगत् आपका, देशभक्त नेता बलिदान ।।

तुम जो कहते थे करते थे, दुखियों के संकट हरते थे ।
पक्के ईश्वर विश्वासी थे, नहीं पापियों से डरते थे ।
सुनकर नाम आपका, थर्राते थे लीडर बेईमान ।
भूलेगा न जगत् आपका, देशभक्त नेता बलिदान ।।

ऋषिवर दयानन्द के चेले, देश भक्त हित संकट झेले ।
अत्याचारी अंग्रेजों के, शोणित से थे होली खेले ।।
स्वतन्त्रता का नाद बजाया, जगा दिया देश महान् ।
भूलेगा न जगत् आपका, देशभक्त नेता बलिदान ।।

स्वामी तुम थे सच्चे नेता, अद्भुत त्यागी वीर विजेता।
परम तपस्वी, महा साहसी, नाम विश्व श्रद्धा से लेता ।
मानवता के आप पुंज, की ऊंची भारत देश की शान ।
भूलेगा न जगत् आपका, देशभक्त नेता बलिदान ।।

जाति–पाति का रोग मिटाया, छुआ–छूत कलंक बताया।
मनुष्यमात्र की जाति एक है, जग को वैदिक पथ दर्शाया।
कर्म प्रधान जगत् में, तुमने दिए हजारों थे व्याख्यान ।
भूलेगा न जगत् आपका, देशभक्त नेता बलिदान ।।

शुद्धि की तलवार चलाई, मिटती हिन्दू कौम बचाई ।
देख वीरता विकट तुम्हारी दुश्मन की सेना घबराई ।
धर्म की रक्षा में है स्वामी, हंसकर हुए आप कुर्बान।
भूलेगा न जगत् आपका, देशभक्त नेता बलिदान ।।

नेता अब यदि धर्म जान लें, और आपकी बात मान लें ।
जिए देश हित मरे देश हित में, हृदय में यदि ठान ठान लें ।
ऋषियों के प्यारे भारत का, हो जाएगा फिर कल्याण ।
भूलेगा न जगत् आपका, देशभक्त नेता बलिदान ।।

–पं. नन्दलाल 'निर्भय',
ग्राम+पो. बहीन, जिला–पलवल (हरियाणा)

शुद्धिकरण कीजिए

धर्म को सत्कर्म से उपकार चाहिए, मानवता को विश्व का श्रृंगार चाहिए।
भटकते राहगीर को शरण दीजिए, दलदल में जो फंसे उनका शुद्धिकरण कीजिए ।।

धर्म जब खिलौनें जागीर बन गये, छोटे घाव भी गहरी पीर बन गये।
समाज के अंग–समाज से बदलने लगे, बिजलियों के दर्द से बादल फटने लगे।
पंखुड़ियाँ मसलने के लिए न चरण दीजिए, दल दल में जो फंसे उनका शुद्धिकरण कीजिए।

डाल से फूल टूटे तो टूटते गये, अपनो से जो रुठे, वो रुठते गये।
घृणा, द्वेष, अन्धकार, के अन्धड़ उड़े, अविश्वास के तब यहां बवंडर उड़े ।।
हम सोये रह गये घर जलता रहा, युगों तक ये क्रम चलता रहा।
वक्त विश्राम का नहीं, विचार मंथन कीजिए, दल दल में जो फंसे उनका शुद्धिकरण कीजिए।

घर की दीवारें सभी चरमराने लगीं, ऊँची मंजिले भी डगमगाने लगीं।
देखी दुर्दशा तो, रोया किसी का मन, अब न लूटने दूँगा, अपना चमन ।।
राह बना दी, उन्होंने अपने सत्कर्म से, बिछुड़े हुऐ लौटे, उस अपने धर्म में।
भंवर मे जिनकी नाव, आलम्बन दीजिए, दल दल में जो फंसे उनका शुद्धिकरण कीजिए।।

ले पताका ज्ञान की महापुरुष बढ़े, अपने धर्म मुकुट में है अमूल्य रतन जड़े।
काँच के टूकड़ों पर न मति भ्रमित कीजिए, आर्य–धर्म मार्ग पर जीवन समर्पित कीजिए।।

– आशु कवि विजय गुप्त
मदनगीर, अम्बेडकर नगर, नई दिल्ली

महान् धर्म रक्षक, शिक्षाविद्, सद्भावना-दूत और क्रान्तिकारी थे स्वामी श्रद्धानन्द

– प्रो. भवानीलाल भारतीय

स्वयं को कल्याण मार्ग पर चलने वाला एक पथिक मानने वाले स्वामी श्रद्धानन्द ने जब उसी नाम से अपनी आत्मकथा लिखाकर ज्ञानमण्डल काशी से 1924 में प्रकाशित कराई तो साहित्य समीक्षकों की धारणा थी कि हिन्दी में आत्मकथा लेखन का इससे अधिक उत्कृष्ट ग्रन्थ कोई अन्य नहीं है। स्वामी श्रद्धानन्द यद्वपि जालन्धर जिले के तलवन नामक ग्राम में जन्मे थे तथा उनकी मातृभाषा पंजाबी थी, किन्तु वे हिन्दी के सुलेखक, पत्रकार तथा राष्ट्रभाषा के हिमायती नेता भी थे। हिन्दी साहित्य के भागलपुर अधिवेशन में अध्यक्ष पद पर अपना अभिभाषण देते हुए उन्होंने हिन्दी के अखिल भारतीय स्वरूप और उसकी राष्ट्र व्यापी मान्यता का विस्तार पूर्वक उल्लेख किया था। वे सफल पत्रकार थी थे। पहले उन्होंने 'सद्धर्म प्रचारक' साप्ताहिक 1889 में उर्दू में निकाला किन्तु यह अनुभव करने पर कि हिन्दी माध्यम का पत्र उनके विचारों को अधिक जनता तक पहुँचा सकता है, उन्होंने 1907 में इसे हिन्दी में कर दिया। उन्होंने एक अन्य पत्र साप्ताहिक 'सत्यवादी' 1904 में निकाला तथा 'श्रद्धा' नामक मासिक का प्रकाशन 1920 में किया। अपने राजनीतिक विचारों के प्रसार के लिए उन्होंने अंग्रेजी में 'दि लिबरेटर' नामक पत्र का आरम्भ किया था। यह पत्र दीर्धजीवी नहीं हो सका।

स्वामी श्रद्धानन्द का आरम्भिक जीवन स्वयं उनके लिए भी सन्तोष प्रद नहीं रहा था। वे अपने माता-पिता की लाडली सन्तान थे। बनारस के क्वीन्स कॉलेज में उन्हें अध्ययन करने का अवसर मिला। यद्यपि वे बी.ए. तक नहीं पहुँचे, किन्तु यूरोपीय दार्शनिकों के अनीश्वरवादी दर्शन तथा अंग्रेजी के रोंमांटिक उपन्यासों के अध्ययन ने उनके मस्तिक में एक विचित्र तूफान पैदा कर दिया था। उनके जीवन में उस समय प्रशान्ति तथा पूर्ण विवेक का आविर्भाव हुआ जब वे 1879 में बरेली में महर्षि दयानन्द के सम्पर्क में आए और उनसे अपने मन में उठने वाली शंकाओं का समाधान प्राप्त किया। यही उनका वास्तविक जन्म समझना चाहिए।

कालान्तर में वकील के व्यवसाय से जुड़े लाला मुंशीराम का कार्य क्षेत्र पंजाब रहा। वे आर्य समाज के नेता, उपदेशक तथा संगठक थे। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के रूप में वे न केवल अपने प्रान्त में अपितु सार्वदेशिक स्तर पर सर्वमान्य नेता की भूमिका में आए। स्वयं के स्वाध्याय के बल पर उन्होंने प्रतिद्वन्द्वी पौराणिक पण्डितों को शास्त्रार्थ समर में पटखनी दी और वैदिक धर्म के गौरव की स्थापना की। प्रारम्भ में वे महर्षि दयानन्द की स्मृति में स्थापित डी.ए.वी कॉलेज की प्रबन्ध व्यवस्था में सहयोग देते रहे, किन्तु जब उन्हें यह आभास हुआ कि इस महाविद्यालय में महर्षि दयानन्द के शिक्षा विषयक आदर्शों को पूरा नहीं किया जा सकता, तो उन्होंने पुरातन शिक्षा प्रणाली को पुररुज्जीवित करते हुए 1902 में गंगा के तटवर्ती बिजनौर जिले के कांगड़ी ग्राम के अंचल में गुरुकुल महाविद्यालय की स्थापना की और मातृभाषा हिन्दी के माध्यम से प्राचीन वैदिक शास्त्रों के साथ-साथ पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञान के पठन-पाठन की समुचित व्यवस्था की। देश की स्वाधीनता के लिए किए गए प्रयत्नों में भी स्वामीजी का योगदान कम नहीं था। राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशनों में प्रतिनिधि रूप में सम्मिलित होना तो उन्होंने 19वीं शताब्दी के अन्तिम दशक में ही आरम्भ कर दिया था। गाँधीजी के अफ्रीका में किए गए आन्दोलनों से उनकी सहानुभूति थी और 1914 में महात्माजी के भारत आने पर उनका सर्वप्रथम सार्वजनिक स्वागत और अभिनन्दन गुरुकुल कांगड़ी में वहाँ के आचार्य महात्मा मुंशीराम ने ही किया था।

पं. गोपाल कृष्ण गोखले, लोकमान्य तिलक, पं. पदनमोहन मालवीय तथा लाला लाजपत राय जैसे देशमान्य नेताओं से उनके आत्मीयतापूर्ण सम्बन्ध आजीवन रहे। जब महात्मा गाँधी जी ने 1920 में असहयोग का प्रवर्तन किया तो स्वामी जी ने उसमें भाग लिया। इस अवसर पर उन्होंने दिल्ली की असहयोगी जनता का नेतृत्व किया। हिन्दू-मुसलिम एकता के प्रबल समर्थक स्वामीजी ने दिल्ली की जामा-मस्जिद की वेदी से मानव जाति की मूलभूत एकता का उपदेश दिया। इससे पूर्व जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड के बाद हुई अमृतसर काँग्रेस में उन्होंने स्वागताध्यक्ष पद को स्वीकार कर देशवासियों को आश्वस्त किया कि भारतवासी दमन और अत्याचार के आगे झुकने वाले नहीं हैं। कालान्तर में काँग्रेस की मुस्लिम-तोषिणी नीति से असहमत होकर उन्होंने हिन्दू जाति के संगठन, दलितोद्धार तथा विधर्मियों को शुद्धि द्वारा हिन्दू धर्म में पुनः प्रविष्ट कराने के आन्दोलन में गोली के शिकार होकर स्वामीजी ने अमर पद प्राप्त किया।

स्वामी श्रद्धानन्द रचित साहित्य

1916-17 की अवधि में स्वामीजी ने आर्यधर्म ग्रन्थमाला नामक एक ग्रन्थमाला का प्रकाशन किया। इसमें छपे सभी ग्रन्थ स्वयं स्वामीजी के द्वारा लिखे गए थे। इन ग्रन्थों में पादरी लेखक जे.एन फर्कुहर द्वारा आर्य समाज और दयानन्द पर लगाए गए आक्षेपों का उत्तर, पारसी मत और वैदिक धर्म की तुलना तथा मानव धर्म शास्त्र और शासन पद्धति आदि प्रमुख हैं। स्वामीजी 'सद्धर्म प्रचारक' आदि पत्रों में वर्षों तक वेद, उपनिषद् तथा अन्य धर्म ग्रन्थों के अंशों की व्याख्या के साथ प्रकाशित करते रहे थे। बाद में उनके ये धार्मिक प्रवचन 'धर्मोपदेश' शीर्षक से 'स्वाध्याय मंजरी' ग्रन्थमाला के अन्तर्गत प्रकाशित हुए। स्वामीजी ने महर्षि दयानन्द विषयक शोध कार्य किया। 'ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका' के तृतीयांश का उन्होंने उर्दू अनुवाद किया तथा पूना नगर में 1875 में महर्षि दयानन्द द्वारा दिए गए 'उपदेश मंजरी' शीर्षक व्याख्यानों का उर्दू अनुवाद प्रकाशित किया। 'उपदेश मंजरी' के महत्त्व को उन्होंने विस्तार से रेखांकित किया था।

हिन्दी की भाँति उर्दू ग्रन्थ लिख कर स्वामी श्रद्धानन्द ने इस भाषा को समृद्ध किया। वर्ण-व्यवस्था, क्षात्रधर्म, यज्ञ के मन्त्रों की व्याख्या, अछूतोद्धार, नियोग प्रथा को औचित्य आदि उनके उर्दू ग्रन्थ 'कुलियात संन्यासी' शीर्षक से छपे थे। पौराणिक पण्डित गोपीनाथ द्वारा 'सद्धर्म प्रचारक' के सम्पादक व प्रकाशक पर चलाए गए मानहानि के मुकदमों के विवरण को उन्होंने उूर्द में छपवाया तथा 'दुखी दिल की पुरदर्द दास्ताँ' लिखकर आर्य समाज विषयक अपने अनुभवों को व्यक्त किया। हिन्दू मुस्लिम इत्तिहाद की कहानी, अन्धा इत्तहाद, और खुफिया ज़िहाद, तथा मुहम्मदी साज़िश का इन्कशाफ आदि उनकी उर्दू कृतियाँ तत्कालीन साम्प्रदायिक मनोवृत्ति वाले लोगों का पर्दाफाश करती हैं।

अंग्रेजी भाषा पर स्वामीजी का असाधारण अधिकार था । The future of the Arya samaj, Hindu Sanghathan, Saviour of the Dying Nation आदि उनकी अंग्रेजी की प्रमुख कृतियाँ हैं। Indide Congres उन राजनीतिक लेखों का संग्रह है जो उन्होंने काँग्रेस में रहकर की गई देश सेवा तथा तज्जन्य कड़वे-मीठे अनुभवों से सम्बन्धित हैं। The Arya Samaj and its Detractors, A Vindication में पटियाला में आर्य समाजियों पर चलाए गए उस अभियोग का विस्तृत वर्णन है जो उस रियासत के राजा ने ब्रिटिश नौकरशाहों के कहने में आकर चलाया था। यह ग्रन्थ आचार्य रामदेव के सहलेखन में लिखा गया था। तत्कालीन गोरी सरकार के प्रति आर्य समाज की नीति को इस ग्रन्थ में सतर्क ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

–नन्दन वन, जोधपुर, राजस्थान

तुझे संत कहूँ या साधु

तुझे धर्मवीर कहूँ या कर्मवीर, सचमुच में ही तूं था परमवीर ।
आर्यों की था अनोखी शान , और वैदिक धर्म की था जान ।।
सफेद वस्त्रधारी सन्यासी था , मांगता न कभी धन राशि था।
महात्मा हंसराज समान महान था, परोपकारिणी सभा का प्रधान था ।।
परोपकार में जुटा दिन रात था, तूने सदा निभाया सत्य का साथ था।
हिन्दी संस्कृत का उद्भट विद्वान था, महाउपदेशक वैदिक विद्वान था ।।
त्यागी तपस्वी व्यक्ति महान था , धर्मवीर भारत माँ का प्राण था ।
तर्कशक्ति वाक्पटुता बेमिसाल थी, आर्यों की वह सॅचमुच ढाल थी ।।
देश विदेश में बाँटता रहा ज्ञान , परोपकारी का सम्पादक था महान ।
खोजपूर्ण लेख सदा लिखता रहा, सोतों को सदा जगाता रहा ।।
मरणोपरान्त सब को याद आ रहा, धर्मवीर मन से न भुलाया जा रहा ।
किया तूने सबके दिल पर जादू , धर्मवीर तुझे संत कहूं या साधू ।।
बार बार तेरी याद सताती है, तेरी क्षति पूर्ति न हो पाती है ।
महर्षि दयानन्द का सच्चा सिपाही था, सेवाराम वह वैदिक राही था।

–सेवाराम आर्य, आर्य समाज नजफगढ़, नई दिल्ली

ऋषि दयानन्द की वह बोधरात्रि

–श्री पं. भवानी प्रसाद जी

इस संसार में नाना प्रकार की साधारण घटनाएं सर्वसाधारण के समक्ष प्रतिदिन होती रहती हैं, जनसाधारण की दृष्टि में वे कोई महत्व नहीं रखतीं। जनता एक क्षण में उन पर दृष्टिपात करती है और दूसरे क्षण में उन को भूल जाती है। किन्तु यही साधारण घटनाएं महापुरुषों के जीवन में महान् परिवर्तन उत्पन्न कर देती हैं। इतिहास साक्षी है कि अति साधारण घटनाओं ने जगत् में बड़ी–बड़ी क्रान्तियां कर दी हैं।

साधारण रोगियों, वृद्धों, शवों (मुर्दों) को ले जाते हुए रथियों और संन्यासियों को सहस्त्रों जन प्रतिदिन देखते हैं, किन्तु इन्हीं साधारण दृश्यों ने शाक्य राजकुमार सिद्धार्थ को वह बोध प्रदान किया जिस का प्रभाव संसार के आधे मनुष्यों पर अब तक विद्यमान है। इन्हीं दृश्यों से उद्बुद्ध बुद्ध की दया ने करोड़ों प्राणियों की निर्दय रक्तपात से रक्षा करके संसार में करुणा और सहानुभूति का स्रोत बहाया था।

वृक्षों पर से फलों को गिरते हुए नित्य ही लक्षों मनुष्य देखते हैं, किन्तु आइजक न्यूटन की दिव्य दृष्टि ने एक वृक्ष से फल के पतन को देख पर पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण के नियम का साक्षात्कार किया। बटलोई की भाप अपने ऊपर के ढक्कन को अनेक मनुष्यों के नेत्रों के सामने हिलाती रहती है, किन्तु न्यूकोमेन की दूरगामिनी बुद्धि ही उस में वर्तमान वाष्प–इंजन का बीज देख सकी।

वृक्ष के पत्रों में से छनता हुआ सूर्य का आलोक बहुधा मनुष्यों की दृष्टि के सामने आता रहता है, किन्तु इटली निवासी पोटौ महानुभाव ने एक वृक्ष के नीचे मध्याह्न में विश्राम करते हुए इसी दृश्य को देखकर आलोक–चित्र (फोटोग्राफी) का मूल सिद्धान्त ढूंढ निकाला।

इसी प्रकार की एक घटना आज हमारे प्रस्तुत प्रकरण से सम्बन्ध रखती है, जिस ने वर्तमान शताब्दी के भारत के धार्मिक इतिहास में अपूर्व क्रान्ति उत्पन्न कर दी।

गुजरात प्रायद्वीप के मौरवी राज्य में मछुकाटा के इलाके में टंकारा एक ग्राम है। सम्प्रति यह ग्राम सौराष्ट्रराज्य के अन्तर्गत है। उस में गुजराती ब्राह्मणों की औदीच्य शाखा का दाल्भ्यगोत्रीय एक समृद्ध सामवेदी कुटुम्ब चिरकाल से वास करता था। उस की उपसंज्ञा त्रिवेदी थी। शिवपुराणोक्त शैव सम्प्रदाय में इस कुल की असीम आस्था थी। वह बड़ी भक्ति से कैलाशधिपति महादेव की पूजा अर्चा में तत्पर रहता था और शैवों के शिव–रात्रि पर्व को बड़े समारोह से मना कर विधि– अनुसार व्रत रखता था। पण्डित करसन जी लाल जी तिवारी इस कुटुम्ब का प्रमुख पुरुष था। तिवारी त्रिवेदी का अपभ्रंश है और करसन जी के पिता का नाम लाल जी था। करसन जो के कई सन्ततियां थीं। उन में से उन के पुत्र का नाम मूलशंकर व दयाल जी था। दयाल जी बड़ा प्रतिभाशाली बालक था। 5 वर्ष की अवस्था में उस ने देवनागरी अक्षर सीख कर बहुत से स्तोत्र और श्लोक कण्ठाग्र कर लिये थे। आठवें वर्ष में उस का यज्ञोपवीत संस्कार हुआ और वह अपने सम्प्रदायानुसार सन्ध्या–वन्दनादि कर्म करने लगा। उस के पिता ने सामवेदी ब्राह्मण होने पर भी रुद्राष्टाध्यायी से युक्त होने के कारण उस को यजुर्वेद कण्ठाग्र कराया था और पार्थिवपूजन आदि का उपदेश दिया था। चौदह वर्ष की अवस्था में दयाल जी को नियम–पूर्वक शैव मत की दीक्षा देने की तैयारी की गई और शिवरात्रि की महारात्रि का महापर्व इस के लिए चुना गया। गुजरात देश में शिवरात्रि का पर्व माघ बदि–13 को होता है और उत्तर भारत में फाल्गुण बदि 14 को यह पर्व मनाया जाता है। इस अन्तर का कारण यह है कि दक्षिण भारत में अमावस्यान्त और उत्तर भारत में पूर्णिमान्त मास गणना प्रचलित है। संवत् 1894 विक्रमी की शिवरात्रि को दयाल जी नियमपूर्वक व्रत रखकर रात्रि कुल के शिव–मन्दिर में गया। रात्रि के प्रथमार्द्ध की पूजा के पश्चात् उस के पिता आदि निद्रा के वशवर्ती हो गये, किन्तु श्रद्धालु बालक दयाल जी भक्ति के आवेश में आंखों पर जल के छीटे मार–मार कर जागता रहा। कुछ देर पश्चात् वह क्या देखता है कि एक मूषक (बालक की मातृ–भाषा गुजराती में उस का नाम 'ओंधर' था) शिव की पिण्डी पर आकर चढ़ावे के अक्षत आदि खाने के लिए उछल–कूद मचाने लगा। दयाल जी के बाल– हृदय में उस को देखकर शंकाओं का समुद्र उमड़ पड़ा। वह सोचने लगा कि शिव तो पुराण में विकराल गणों, पाशुपत अस्त्र और त्रिशूल से युक्त, वर और शाप देने में समर्थ, सर्वशक्तिमान् वर्णित है। यह कैसे सम्भव है कि अपनी मूर्ति पर से वह इस चूहे को नहीं हटा सकता?इस आशंका ने दयाल जी की तर्कणा शक्ति में ऐसा आघात–प्रतिघात उत्पन्न किया कि उसी क्षण से उस को पाषाण की पिण्डी के शिव न होने का निश्चय हो गया और उस ने उसी समय सत्यशिव की गवेषणा का संकल्प धारण कर लिया। उस ने तत्काल अपने पिता जी को जगाया और अपनी शंका उन से निवेदन की। उन्होंने उस की शंका के समाधान का नाना प्रकार से उद्योग किया, किन्तु दयाल जी का सन्देह निवृत्त न हुआ, तब उस ने अपने मन में यह व्रत दृढ़ कर लिया कि मैं शिव का साक्षात्कार किये बिना उस का पूजन कदापि न करूंगा।

चूहे की इस क्षुद्र घटना ने ही दयाल जी के दयानन्द बनने का सूत्रपात किया। आगे की घटनावली केवल उस की सहायक मात्र थी, वह क्रिया प्रतिक्रिया की क्रममात्र थी। वस्तुतः इस शिवरात्रि ने ही दयानन्द को बोध प्रदान किया था और वही दयानन्द के जीवन भर के मूर्ति पूजा के विरुद्ध विकट संग्राम का आदि कारण थी। इसीलिए उस को आर्यसमाज के इतिहास में 'दयानन्द–बोधरात्रि' कहते हैं और आर्यसामाजिक परिवारों में उस दिन प्रत्येक वर्ष दयानन्द बोधरात्रि नाम का पर्व मनाया जाता है। शायद इस समय जब कि ऋषि दयानन्द के उद्योग ने मूर्तिपूजा के विश्वास को जड़ से हिला दिया है, साधारण दृष्टि में दयानन्द बोधरात्रि का उतना महत्त्व न जंचे, किन्तु आर्यसमाज के आचार्य के कार्यक्षेत्र में अवतीर्ण होने से पूर्व की मूर्तिपूजा की दशा पर जब हम दृष्टिपात करते है तो दयानन्द बोधरात्रि के प्रभाव का पूर्ण चित्र हमारे हृदय–पटल पर अंकित हो जाता है। उस समय मूर्तिपूजा के विरुद्ध एक शब्द का भी उच्चारण हिन्दू धर्म के मूल पर कुठाराघात समझा जाता था और ऐसा करने वालों को नास्तिक की उपाधि तत्काल मिलती थी। महाभारत युद्ध के पश्चात् वेदानुयायियों में अनेक सिद्धांतों पर मतभेद रखने वाले बहुत से मतप्रवर्तक उत्पन्न हुए हैं किन्तु वेद के प्रमाणों के आधार पर मूर्तिपूजा के खण्डन का गौरव वेद के अद्धितीय भक्त, आर्यसमाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द को ही प्राप्त है। ऋषि दयानन्द के आविर्भाव से पूर्व मूर्तिपूजक जनता मूर्तियों को साक्षात् उपास्य देव मानकर ही पूजती थी और अब तक सर्वसाधारण अज्ञ जनों की यही भावना है। किन्तु ऋषि दयानन्द के मूर्तिपूजा का प्रबल परिहार करने पर सनातनी पण्डितों ने इस नवीन युक्ति का आश्रयण आरम्भ किया था कि मूर्तियाँ तो केवल चित्त की एकाग्रता का साधन मात्र हैं। वे मूर्तिपूजा के अर्थ 'मूर्त्तेःपूजा–मूर्ति की पूजा' छोड़ कर 'मूर्तौ पूजा– मूर्ति में पूजा' करने लगे। परन्तु दयानन्द की दीर्घ दृष्टि ने खूब ताड़ लिया था कि ये युक्तियां पुजारियों के द्रव्यापहरण के हथकण्डे हैं और अपने अनुयायियों की बुद्धियों को जड़ बनाये रखने का साधन मात्र हैं। ऋषि दयानन्द ने भले प्रकार अनुभव कर लिया था कि इस समय मूर्तियों के मन्दिर दुराचार के दुर्गम दुर्ग बने हुए हैं। अधिकांश मादक द्रव्य सेवी मूर्खों, भंगड़ियों, गञ्जड़ियों और मद्यपों को काली भैरव और महादेव के मन्दिरों में ही शरण मिलती है और वहीं उन का जमाव रहता है। स्वेछाचारी और अनाचारी महन्तों की सम्पत्तिशीलत्ता के साधन भी यही मन्दिर हैं। इसलिए जब तक इन की जड़ मूर्तिपूजा का उन्मूलन भारत से न होगा, तब तक यथार्थज्ञान के प्रसार और भारत माता के उद्धार की आशा दुराशामात्र है। इसी विचार–परम्परा ने महर्षि दयानन्द को मूर्ति–पूजा के घोर विरोध के लिए उद्यत और कटिबद्ध किया था और उस का परिणाम आपके नेत्रों के सामने स्पष्ट उपस्थित

है कि चाहे हमारे पौराणिक भाई अपने मुख से स्वीकार करें वान करें, पर अन्तः करण में वे इसको भली प्रकार जानते हैं कि साक्षर जनता का विश्वास मूर्ति-पूजा से उठ चुका है। इतना तो सनातनी पण्डित भी अवश्य कहने लगे हैं कि मूर्ति-पूजा केवल अज्ञानियों के लिए है, ज्ञानियों को उस की आवश्यकता नहीं है। क्या यह धार्मिक जगत् में बोधरात्रि की की हुई महाक्रान्ति नहीं है कि जिस मूर्ति-पूजा की जड़ को महमूद गजनवी का खड्ग, औरंगजेब का अत्याचार अपने बल से न हिला सका था उस को महर्षि दयानन्द के प्रबल तर्क तथा प्रचार ने मृदुतापूर्वक खोखला कर दिया। अब समझदार सनातनी भी मूर्ति-मन्दिर निर्माण की निरर्थकता को भले प्रकार समझ गये हैं और वे भी स्थान स्थान पर विद्यालय, ऋषिकुल, ब्रह्मचर्याश्रम, स्कूल और कालेज खोल रहे हैं। ये बातें दर्शा रही हैं कि आर्यसन्तान वास्तविक मन्दिरों के स्वरूप को जान गई है और उस स्वरूप को उन के समक्ष लाने वाला दयानन्द ही था।

बोधरात्रि का वृत्तान्त दयानन्द के व्रत की दृढ़ता का भी सूचक है। उस ने केवल 14 वर्ष की बाल्यावस्था में जो व्रत ग्रहण किया था, उस को आजीवन निभाया। मूर्तिखण्डन छोड़ देने के लिए उस को नाना प्रकार के प्रलोभन और भय दिखलाये गये, किन्तु वह अपनी प्रतिज्ञा पर अटल रहा। उदयपुर राज्य की घटना आर्य सामाजिक पुरुषों को ज्ञात ही होगी कि उन के शिष्य उदयपुराधीश्वर महाराणा सज्जनसिंह ने उन से निवेदन किया था कि उदयपुर का राज्य एकलिंगेश्वर महादेव के मन्दिर के आधीन है। यदि आप यहां मूर्तिपूजा का खण्डन न करें तो इस मन्दिर की गद्दी आप को मिल सकती है, जिस से आपका कई लाख रुपये पर अधिकार हो जायेगा। यह सुनकर स्वामी जी को बहुत क्रोध आया और उन्होंने कहा कि "तुम मुझ को तुच्छ लालच देकर बड़े बलवान् की आज्ञा तुड़वाना चाहते हो। यह छोटी सी रियासत और उस का मन्दिर कि जिस में से मैं एक दौड़ से बाहर जा सकता हूं, मुझे कभी भी वेद और ईश्वर की आज्ञा को तोड़ने पर बाधित नहीं कर सकते।" (यह उक्ति पं. मोहनलाल, विष्णुलाल पंड्या की बतलाई हुई पं. लेखराम जी आर्यपथिक संगृहीत महर्षि की जीवनी में दी हुई है।) यह सुनकर महाराणा साहब ने उन के धार्मिक भाव से चकित होकर निवेदन किया "महाराज मैंने यह सब इसलिए कहा था कि मैं देखूं कि आप इस के खण्डन पर कितने दृढ़ हैं? अब मेरा निश्चय पहले से बहुत अधिक दृढ़ हो गया है कि आप वेद की आज्ञा पालने में दृढ़ हैं।" ऐसे ही दृढ़-व्रती और अविचलित निश्चयी पुरुषों से संसार का कल्याण होता है, जो बाल्यावस्था में ही दयानन्द और बुद्ध आदि के समान साधारण घटनाओं से भी बोध प्राप्त करके अविद्यान्धकार को हटाकर ज्ञानज्योति का प्रसार करते रहते हैं।

आर्य महाशयों को दयानन्द बोधरात्रि से यह शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए कि प्रत्येक पुरुष का कर्त्तव्य है कि वह साधारण घटनाओं को भी अन्तर्दृष्टि से अवलोकन करने का अभ्यासी बने और अपने अंगीकृत व्रत को प्राणपण से पालता रहे। दयानन्द बोधरात्रि को प्रत्येक आर्य के यहां ऋषि दयानन्द के गुणों का कीर्तन होना चाहिए।

महात्मा सत्यानन्द मुंजाल आर्य कन्या गुरुकुल
शास्त्री नगर, लुधियाना- (पंजाब) दूरभाष 9814629410
(पंजाब का एकमात्र कन्या गुरुकुल)
प्रवेश सूचना-सत्र 2018-2019

छठी कक्षा में (आयु +9 से - 11 वर्ष से) कन्याओं के प्रवेश हेतु नियमावली एवं पंजीकरण पत्र (मूल्य केवल 100/- रुपये) भरकर 31.03.2018 तक गुरुकुल के कार्यालय में जमा करवाएं। (पंजीकरण पत्र डाक द्वारा भी प्राप्त किए जा सकते हैं।)

- कन्याओं की लिखित प्रवेश-परीक्षा 01 अप्रैल 2018 दिन रविवार को प्रातः 8:00 बजे होगी।

- सफल कन्याओं का साक्षात्कार एवं स्वास्थ्य परीक्षण भी उसी दिन होगा।

-मोहन लाल कालडा (मैनेजर)

माह जनवरी 2018 के आर्थिक सहयोगी

श्री चतर सिंह नागर, महामंत्री भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, दिल्ली		5000/-
ई. वेदप्रकाश मुनि जी, आर्य वान प्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर-हरिद्वार		2100/-
श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा, प्रधान, भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, दिल्ली		1100/-
आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली	मासिक	1000/-
ब्रिगेडियर के. पी. गुप्ता जी, सैक्टर-15, फरीदाबाद	मासिक	1000/-
आर्य समाज साकेत, नई दिल्ली	मासिक	800/-
आर्य समाज इन्द्रा नगर, बंगलौर	मासिक	750/-
श्री चतर सिंह नागर जी, महामंत्री शुद्धि सभा	मासिक	500/-
श्री शिव कुमार मदान जी ट्रस्ट, सी-3, जनकपुरी, नई दिल्ली	मासिक	200/-
श्रीमती सुशीला चावला जी, पीतमपुरा, दिल्ली	मासिक	100/-
श्रीमती राज सेठी जी, विजय नगर, दिल्ली	मासिक	100/-

श्रीमती वासन्ती चौधरी जी द्वारा एकत्रित दान

श्रीमती वासन्ती चौधरी जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर	मासिक	500/-
श्रीमती संतोष वहल जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर	मासिक	100/-
श्रीमती नीलम खुराना जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर	मासिक	100/-
मास्टर अर्पण हंस, (नाती-श्रीमती नीलम खुराना जी), न्यू राजेन्द्र नगर		100/-
बेबी स्वस्ति आर्या सुपुत्री डा. देवेश प्रकाश जी, आर्य महिला आश्रम	मासिक	100/-
श्रीमती कैथरिन जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर	मासिक	100/-
श्रीमती आशा रानी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर		100/-
श्रीमती कृष्णा दूबे, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर		100/-
श्रीमती सावित्री आर्या, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर		50/-
श्रीमती निर्मल शर्मा जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर	मासिक	50/-
श्रीमती इन्दू बिज जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर		50/-
श्रीमती नीरजा जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर	मासिक	50/-

ठीक है

आर्य बनना तो ठीक है, अनार्य बनना ठीक नहीं ।
चादर बिछाना तो ठीक है, चादर चढ़ाना ठीक नहीं ।।
किसी को सुनाना तो ठीक है, किसी को न सुनना ठीक नहीं ।
किसी को सच बोलना तो ठीक है, किसी से झूठ बुलवाना ठीक नहीं।।
शत्रु का सामना करना तो ठीक है, शत्रु को पीठ दिखाना ठीक नहीं।
किसी से मिलना तो ठीक है, मगर वक्त पर न आना ठीक नहीं ।
किसी को पढ़ाना तो ठीक है, शादी के लिए पढ़ाई छुड़वाना ठीक नहीं ।
किसी से ज्ञान लेना तो ठीक है, बिना परखे गुरु बनाना ठीक नहीं ।
नैनों में नेह होना तो ठीक है, गुस्से में आखें दिखाना ठीक नहीं ।
किसी की प्रशंसा करना तो ठीक है, पीठ पीछे निन्दा करना ठीक नहीं।
काम करना कराना तो ठीक है, काम न करने के बहाने बनाना ठीक नहीं।
मानव धर्म सब को पसंद, गैर मुस्लिम को काफिर गिनाना ठीक नहीं।
बीमार को दवाई देना तो ठीक है, दवाई दे ईसाई बनाना ठीक नहीं।
सब से मित्रता करना तो ठीक है, अपनो में फूट डलवाना ठीक नहीं।
भोजन तो शरीर के लिए आवश्यक, सारा दिन खाते ही जाना ठीक नहीं।
सड़क पर वाहन चलाना तो ठीक है, तीव्र गति से दुर्घटना होना ठीक नहीं।
पेड़ लगाना तो ठीक है, पेड़ों का कटते ही जाना ठीक नहीं।
गन्ने से बना गुड़ तो ठीक है, अंगूर से बनी मदिरा पीना ठीक नहीं।
गाय का दूध पीना तो ठीक है, गाय की हत्या करना ठीक नहीं।
किसी का हाथ पकड़ना तो ठीक है, किसी की टांग खींचना ठीक नहीं।
खाने के लिए आग जलाना तो ठीक है, किसी जगह आग लगाना ठीक नहीं।
गाड़ी में सफर करना तो ठीक है, गाड़ी का पटरी से उतर जाना ठीक नहीं।
अंग्रेजी सीखने में कोई बुराई नहीं, इसे राज्य भाषा बनाना ठीक नहीं।
विज्ञान को अपनाना तो ठीक है, मगर धर्म को छोड़ना ठीक नहीं।
केला खाना तो ठीक है, सड़क पर छिलका गिराना ठीक नहीं।
शादी करना तो ठीक है, पर तलाक देना ठीक नहीं।
देश भक्ति तो ठीक है, देश से गद्दारी करना ठीक नहीं।
महनत की कमाई तो ठीक है, ऊपर की कमाई करना ठीक नहीं।
गले मिलना तो ठीक है, बिछड़ कर न मिलना ठीक नहीं।
सूर्य चन्द्रमा की रोशनी तो ठीक है, कोहरे का बार बार आना ठीक नहीं।
खून दान करना तो ठीक है, किसी का खून बहाना ठीक नहीं।
किसी को वचन देना तो ठीक है, वचन देकर ना निभाना ठीक नहीं।
आर्य बनना तो ठीक है, अनार्य बनना ठीक नहीं।

– हरबंसलाल कोहली (संरक्षक)

R.N.I. No. 43084/76 Date of Publication 01-2-2018 (pages 8) Posting Date : 2-3 Every Month
Delhi Postal R.No. G-3/DL (N) 060/2018-20

सेवा में,

शुद्धि समाचार

फरवरी – 2018

महर्षि दयानन्द की 194वीं जयन्ती

वेदों में राष्ट्र की वन्दना की गयी है। राष्ट्र के आराधक चिन्तक, आर्य समाज संस्थापक महर्षि दयानन्द ने वेद मार्ग पर चलते हुए देश को स्वतन्त्र कराने का सर्वप्रथम आह्वान किया। वे वैदिक धर्म की पावन धारा में आर्य जनों को संस्कारित हुए जनसाधारण में स्वतन्त्रता हेतु जाग्रति पैदा करते रहे। किन्तु खेद का विषय है महर्षि दयानन्द को आज तक राष्ट्रपितामह का दर्जा नहीं दिया गया है। यद्यपि आर्य समाज का विश्व में डंका बज रहा है और सकल वसुधा पर वैदिक नाद गुंजायमान करते हुए महर्षि दयानन्द के उद्देश्य विजय पताका फहरा रहे हैं लेकिन तुच्छ राजनीति व स्वार्थपरता के चलते गुजरात की भाजपा सरकार ने हाल ही में एक ऐसी गहानपुरूषों की सूची से महर्षि दयानन्द का नाम लुप्त कर दिया जिन्होंने देश को आजाद कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी। गुजरात तो महर्षि दयानन्द की पावन जन्म भूमि है।

आर्यजनों ! यह समय चिन्तन का समय है। कि वर्तमान राजनीति में कितनी स्वार्थ परता है। सभी जन अपने-अपने धर्म, जाति, सम्प्रदाय आदि से प्रेरित होकर महापुरूषों की जयन्ती पर केन्दीय सरकारी अवकाश कर रहे हैं किन्तु जो महापुरूष धर्मनिरपेक्षता की राह पर चला। सभी को आर्य अर्थात श्रेष्ठ बनाया उन महर्षि दयानन्द की जयन्ती पर कोई केनद्रीय सरकारी अवकाश घोषित नहीं किया गया है।

आर्य समाज का उद्देश्य वेद, समाज सुधार, शिक्षा का विस्तार, मानवता की रक्षा आदि का प्रचार-प्रसार करते विश्व पटल पर गति करना है। महर्षि दयानन्द के जीवन काल में लंका, म्यामार पाकिस्तान व बंगला देश भारत के ही

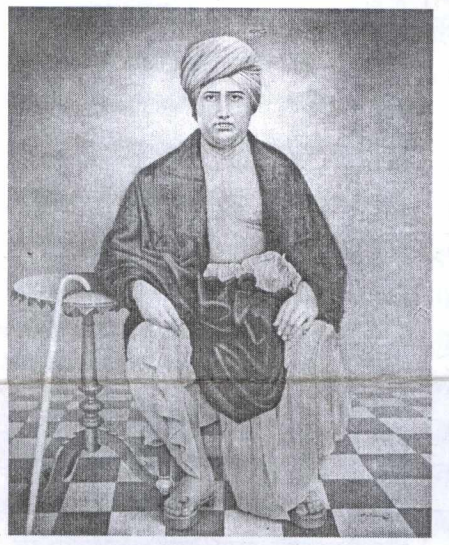

अंग थे किन्तु वर्तमान में ये सभी अलग-अलग देश बन चुके हैं।

आर्य समाज के इतिहास में विज्ञान, धर्म, वेद, समाज और साहित्य को अतुलित ऊँचाई प्रदान करने वाले आ के अनुयायी और घोर समर्थक वर्त न राजनीति के विभिन्न दलों में महत्व ूर्ण व प्रभावशाली पदों पर प्रतिष्ठित रहे हैं और इस समय भी प्रतिष्ठित हैं किन्तु वे आज तक किसी भी दल में "आर्य प्रकोष्ठ" की स्थापना नहीं करपाए ।

यह गहन चिन्तन का विषय है कि आर्यों की माँगों की राजनीति में उपेक्षा व अवहेलता निरन्तर की जाती रही है, किन्तु आर्यजन आज भी सामाजिक सुधार व देश के विकास में लगे हुए है। यद्यपि अभी तक आर्य वोट बैंक भी नहीं है, लेकिन आर्यजनों को अपना प्रयास जारी रखना है।

महर्षि दयानन्द ऐसे अग्नि पुरुष युगधर्मी थे जिन्होंने देश को आजादी दिलाने हेतु समाज में युवाओं को अपना पावन कर्त्तव्य निर्वाह करने में अपना सर्वस्व बलिदान करने की प्ररेणा दी। जब इतिहास के पृष्ठ पलटे जाते है तो देश भक्तों का बलिदान, उनकी आदर्शपूर्ण कहानियाँ हमें स्वाभिमान का प्रेरणा और सत्साहस का सन्देश देती हैं। आज वही समय स्मरण करते हुए युवाओं को अपने आजाद देश का नाम **"आर्यवर्त"** रखने पर विचार करना चाहिए।

महर्षि दयानन्द हिन्दी, स्वदेशी प्रचार-प्रसार शुद्धि शराबबन्दी, शाकाहार सस्कृति, गो-दूध सेवन-पालन के प्रबल समर्थक थे। इसीलिए उन्होंने काशी में सर्वप्रथम विशुद्ध वेद पर आधारित सस्कृत व आर्य भाषा हिन्दी के माध्यम से पाठशाला खोलने की प्रेरणा दी। वर्तमान में भी आपके नाम से चल रहे कालेजों में सहशिक्षा चल रही है किन्तु खेद का विषय है कि इन विद्यालयों में सुविधानुसार धर्म शिक्षा नहीं दी जा सकती। यह विचारणीय विषय है कि दोनों ही कार्य महर्षि दयानन्द की सोच के विपरीत है।

महर्षि दयानन्द के पुरुषार्थ के कारण ही वेद व आर्यसमाज एवं समाज सुधार की धारा को निरन्तरता मिली थी, किन्तु वर्तमान में मूर्तिपूजा, अन्धविश्वास, कब्र -मजार पूजा, बलिप्रथा, बलात्कार, यौन उत्पीड़न, दहेजहत्या, धर्म जातिगत भेदभाव, तान्त्रिक पूजा आदि सामाजिक कुरीतियाँ निरन्तर समाज में व्याप्त है किन्तु हमारे आर्यजन समानान्तर सभाएं बनाकर अपनी स्वार्थ परता की नीति के चलते अपनी शक्ति व्यय कर रहे है

– नरेन्द्र चौधरी

इन कुरीतियों को दूर करने हेतु हम सभी "आर्यजनों" को सभी भेद-भाव भुलाकर शक्ति सम्मन्न बनकर एकजुट होनो होगा।

वर्तमान ज्वलन्त सामाजिक समस्या है "कन्या भ्रूण हत्या"। यद्यपि आर्यजन द्वारा विभिन्न स्तरों पर पुरजोर विरोध किया जा रहा है किन्तु संख्याबल में कमी तथा अपनी भारतीय संस्कृति के स्वरूप को अच्छी तरह समाज में जाग्रत न करने के कारण यह समस्या समाधान का रूप ग्रहण नहीं कर पा रही है ।

समस्त देशवासियों के लिए आत्म चिन्तन का समय है कि हमारे देश का शासन परोक्ष रूप से ईसाइयों व मुस्लिम नेताओं द्वारा चलाए जाने का प्रयास किया जा रहा है। यदि ऐसा ही चलता रहा तो वह दिन दूर नहीं हमारा देश पुनः गुलामी की जंजीरों में जकड़ जाएगा।

हम सभी आर्यजन हैं हमारा परम कर्त्तव्य है कि हम वर्तमान परिस्थितियों से टक्कर लेने के लिए आपसी मतभेद को बुलाकर एकमंच पर एकत्रित होकर सामाजिक जागरूकता अभियान चलायें और "संगठने शक्ति" को साकार करते हुए महर्षि दयानन्द के उद्देश्यों को पूरा करें।

महर्षि दयानन्द जी के जन्म दिवस (दयानन्द दसवीं) 10 फरवरी 2018 की हार्दिक शुभकामनाएं।।

टंकारा बोधोत्सव 12,13,14 फरवरी 2018

हर्ष का विषय है कि प्रतिवर्ष की भांति आगामी वर्ष में महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में ऋषि बोधोत्सव का आयोजन सोमवार, मंगलवार, बुधवार 12, 13, 14, फरवरी 2018 को किया जाएगा। आपसे निवेदन है कि आप यह तिथियाँ अभी से अंकित कर लेवे और इन तिथियों में अपनी आर्य समाज एवं संस्था का कोई कार्यक्रम न रखकर उक्त समारोह में अधिक से अधिक आर्य जनों के साथ टंकारा पधारने का कार्यक्रम बनायें। आपके आवास (आने की पूर्व सूचना देने पर) एवं भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगी।

निवेदकः राम नाथ सहगल, मन्त्री टंकारा ट्रस्ट, आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

मुद्रक, व प्रकाशक – रामनाथ सहगल द्वारा गुरमत प्रिंटिंग प्रेस, 1337, संगतरासन, पहाड़ गंज, नई दिल्ली-55 दूरभाष : 23561625, से मुद्रित एवं भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, 6949, बिड़ला लाइन दिल्ली-7 दूरभाष : 23857244 से प्रकाशित। सम्पादक : आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, सह-सम्पादकः डॉ. देवेश प्रकाश आर्य